B.A. History Hon's, Part: II
Paper: IV, Unit: II, Date: 10.10.2020 Lecture No.: 14

Lession: 1911 की चीनी राज्यक्रान्ति

1911 की चीनी राज्यक्रान्ति चीन ही नहीं अपितु सम्पूर्ण एशिया के इतिहास में एक महत्वपूर्ण क्रान्तिकारी घटना थी जिसके द्वारा चीन में राजतंत्र का सदा के लिए अन्त हो गया और गणतंत्र की स्थापना हुई। इस प्रकार चीनी राज्यक्रान्ति द्वारा स्थापित चीनी गणराज्य एशिया का प्रथम गणतांत्रिक राज्य बन गया। यह राज्यक्रान्ति मंचू राजवंश विफलताओं और चीन की आर्थिक बदहाली के विरुद्ध नवजागरण जनित क्रान्तिकारी लोकतांत्रिक विचारों के विकास परिणामस्वरूप हुई थी। एक अर्थ में यह क्रांति सफल रही कि चीन में राजतंत्र का अन्त हो गया किन्तु दूसरे अर्थ में यह क्रान्ति अधूरी थी कि चीन अपनी समस्याओं से मुक्ति नहीं पा सका और अन्ततः एक लम्बे संघर्ष के द्वारा दूसरी राज्यक्रान्ति साम्यवादी सत्ता की स्थापना के रूप में हुई। यहाँ 1911 की राज्यक्रान्ति का विवेचन अपेक्षित होगा।

(क) क्रान्ति की पृष्ठभूमि:

19वीं सदी के उत्तरार्द्ध में यूरोपीय साम्राज्यवादी देशों और अमेरिका ने चीन को तरबूजे की तरह काटकर इस तरह भक्षण किया कि चीन की राजनीतिक दशा एवं आर्थिक स्थिति अत्यन्त ही दयनीय हो गई, जिसपर काबू पाने में चीन का मंचू राजवंश समर्थ नहीं था। दूसरी ओर भारी संख्या में चीन के युवा विदेशों से शिक्षा प्राप्त कर आधुनिक ज्ञान एवं कौशल के साथ-साथ आधुनिक लोकतांत्रिक विचारों से भी लैस होकर चीन वापस लौटते रहे। जैसे-जैसे चीन में इनकी संख्या बढ़ती गई उसी के अनुरूप क्रान्तिकारी लोकतांत्रिक विचारों का भी बढ़ने लगा। चीन में अनेक क्रान्तिकारी संगठन बने जो यह मानते थे कि चीन में मंचू राजवंश की सत्ता को समाप्त कर इस लोकतांत्रिक गणराज्य में पुनर्गठित कर ही न केवल दुर्दिनों को समाप्त किया जा सकता था, बल्कि जापान के रास्ते पर चलकर चीन का कायाकल्प भी किया जा सकता है। वस्तुतः मंचू राजवंश की दुर्बलता एवं विफलता के विरुद्ध चीन में नवजागरण की उठती लहरों ने 1911 की राज्यक्रान्ति के लिए आवश्यक परिस्थिति का निर्माण किया।

लड़खड़ाते मंचू राजवंश की महारानी त्सू हसी ने युआन शी काई को अपना प्रधानमंत्री बनाकर सेना तथा शासन में सुधार कार्य प्रारम्भ किया। सेना को पुनर्गठित किया गया और प्रान्तों तथा केन्द्र में विधान सभाओं की स्थापना की गई। किन्तु समस्याओं पर काबू पाना संभव नहीं हुआ। गरीबी, भुखमरी, बेरोजगारी, बेतहाशा बढ़ रही थी और उसी अनुपात में चीनियों का देश से पलायन जारी था। 1911 तक चीन की आबादी बढ़कर 43 करोड़ हो गई थी और चीन के प्रवासियों की संख्या बढ़कर 1 लाख 25 हजार तक पहुँच गई थी। 1910-11 में बाढ़ों और अकालों के कारण बीस लाख लोगों की भूख से तड़पकर मौत हो गई। एक तरफ जहाँ चीन आर्थिक तौर पर बदहाल था, वहीं दूसरी ओर साम्राज्यवादी देशों द्वारा चीन के आर्थिक दोहन का सिलसिला लगातार बढ़ रहा था।

इस दौरान भारी संख्या में चीनी प्रवासी अमेरिका, जापान आदि विकसित देशों से शिक्षा प्राप्त कर चीन वापस भी लौट रहे थे। इन बुद्धिजीवियों ने चीन को संकट एवं दुर्दशा से उबारने के लिए क्रान्तिकारी दलों का गठन कर क्रान्तिकारी विचारधारा का प्रचार-प्रसार करना शुरू किया। इनमें सर्वप्रथम थे डा० सनयात सेन। सनयात सेन के पिता ने ईसाई धर्म स्वीकार

कर लिया था और उन्होंने अपने पुत्र को हांगकांग और हवाई द्वीप में आधुनिक शिक्षा दिलवाई। शिक्षा प्राप्ति के दौरान सनयात सेन क्रान्तिकारी एवं सुधारवादी दोनों विचारधाराओं से प्रभावित हुए। फलतः चीन वापस आने के बाद 1895 में उन्होंने एक विद्रोह का नेतृत्व किया। इसमें असफल होने पर 1898 सनयात सेन ने चीन से पलायन कर जापान में शरण लिया और वहीं से ~~उन्होंने~~ चीन में क्रान्तिकारी विचारों का प्रसार प्रारम्भ किया। जापान में भारी संख्या में चीनी छात्र रहते थे, जो सनयात सेन से क्रान्ति की दीक्षा लेकर चीन वापस लौटते थे। सनयात सेन ने तुंग मेंग हुई नाम से क्रान्तिकारी दल का गठन किया जिसका चीन के कैंटन प्रदेश में भारी प्रभाव था। धीरे-धीरे चीन के अन्य भागों में भी इस दल की शाखाएँ स्थापित हुई जो चीनी नागरिकों के साथ-साथ सैनिकों के बीच भी मंचू राजवंश के अन्त और गणराज्य के स्थापना के लिए चेतना जागृत करने का काम करते थे। लोकतांत्रिक विचारों से इस तरह नागरिकों के साथ-साथ सैनिक भी लैस होने लगे।

इसी विस्फोटक परिस्थिति में 1911 में चीनी राज्यक्रान्ति की शुरुआत विभिन्न स्थानों पर मंचू राजवंश के विरुद्ध विद्रोहों से हुई। 10 अक्टूबर 1911 को हैंको में हुए बम विस्फोट से चीनी राज्यक्रान्ति का शंखनाद हो गया। हैंको से प्रारम्भ विद्रोह की लहर तेजी से चीन में फैल गई। सेना ने विद्रोहियों का साथ दिया। संपाई में क्रान्तिकारी दलों ने मिलकर एक गणतांत्रिक सरकार का गठन किया।

जब क्रान्ति की धारा चीन में तेजी से फैल रही थी तो पेकिंग की सरकार ने राष्ट्रीय महासभा के बैठक का आयोजन किया। राष्ट्रीय महासभा ने संसदीय शासन प्रणाली की स्थापना की सिफारिश की, जिसे मंचू सरकार ने स्वीकार कर लिया। 8 नवम्बर 1911 को महासभा में युआन शी काई को चीन का प्रधानमंत्री निर्वाचित किया, जो एक सर्वाधिक सुयोग्य राजनेता था। युआन शी काई ने क्रान्ति के दमन एवं समझौता दोनों ही नीतियों का एक साथ अवलम्बन किया। एक तरफ जहाँ कई स्थानों पर क्रान्तिकारियों का दमन करने में युआन शी काई को सफलता मिली वहीं शंघाई स्थित गणतांत्रिक सरकार से वार्ता का दरवाजा भी खुला। नानकिंग के क्रान्तिकारी नेताओं और विद्रोही राज्यों की विधान सभाओं के प्रतिनिधियों ने मिलकर विधिवत गणतांत्रिक सरकार के गठन की घोषणा की और डा० सनयात सेन को इसका तात्कालिक राष्ट्रपति चुना। सनयात सेन ने 29 दिसम्बर 1911 को चीनी गणराज्य के अस्थायी राष्ट्रपति का पदभार सम्भाला और डा० वू टिंग फांग को पेकिंग की सरकार से वार्ता के लिए प्रतिनिधि मनोनीत किया गया। परिणामस्वरूप 12 फरवरी 1912 को युआन शीकाई और डा० सनयात सेन की सरकारों के बीच समझौता सम्पन्न हुआ, जिसके अनुसार चीन में मंचू राजवंश के शासन का अन्त हो गया और युआन शीकाई चीनी गणराज्य का प्रथम राष्ट्रपति बना।

इस प्रकार चीनी राज्यक्रान्ति के द्वारा दो सौ वर्षों से आ रहे मंचू राजवंश के शासन और प्राचीन राजतंत्र का अन्त हो गया। क्रान्ति के बाद स्थापित चीन का गणराज्य एशिया महादेश का पहला गणराज्य बन गया, जो एक लोकतांत्रिक गणराज्य था।

□ डा० शंकर जय किशन चौधरी
अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग
डी० बी० कालेज, जयनगर